मृतकों के लिए प्रार्थना करना बाइबिल के अनुसार क्यों उचित
नहीं है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

बाइबिल कहीं भी यह नहीं सिखाती और न ही कोई उदाहरण देती है कि मृतकों के लिए प्रार्थना करना प्रभावी है या ऐसा करना हमें आदेशित किया गया है। इस विषय से जुड़ा एकमात्र उल्लेख लूका का सुसमाचार 16:19–31 में मिलता है, जहाँ धनी मनुष्य और लाज़र की दृष्टांत दी गई है। यह दृष्टांत वास्तव में यह समझाने के लिए है कि मृतकों के लिए प्रार्थना क्यों प्रभावी नहीं होती।

इस दृष्टांत में एक धनी मनुष्य मरने के बाद अधोलोक में पीड़ा भोग रहा होता है, जबकि लाज़र अब्राहम की गोद में शांति पा रहा होता है। उस धनी मनुष्य ने अब्राहम से विनती की कि लाज़र को उसके भाइयों के पास भेजा जाए, ताकि वे भी इस पीड़ा के स्थान पर न आएँ। तब अब्राहम ने उत्तर दिया कि उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा (अर्थात पवित्र शास्त्र) है, और उन्हें उसी को सुनना चाहिए। इस पर धनी मनुष्य ने कहा कि यदि कोई मरे हुओं में से जाकर उन्हें चेतावनी दे, तो वे अवश्य मानेंगे। लेकिन अब्राहम ने कहा:

“यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि कोई मरे हुओं में से जी भी उठे, तौभी उसकी न मानेंगे।”
(लूका 16:31)

मृतकों के लिए प्रार्थना करना बाइबिल के अनुसार क्यों उचित
नहीं है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

यह बात स्पष्ट करती है कि मृत्यु के बाद कोई दूसरा अवसर नहीं होता, और न ही ऐसा कोई हस्तक्षेप संभव है जो किसी मनुष्य की अनन्त स्थिति को बदल सके। धनी मनुष्य की अपने भाइयों के लिए की गई विनती इसलिए अस्वीकार कर दी गई, क्योंकि परमेश्वर का वचन ही पर्याप्त है—और यदि कोई व्यक्ति उसे नहीं मानता, तो कोई भी असाधारण घटना उसके हृदय को नहीं बदल सकती।

इसके अलावा, अब्राहम यह भी बताता है कि पीड़ा में रहने वालों और शांति में रहने वालों के बीच एक स्थायी खाई है:

“और इन सब बातों के सिवा, हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई ठहरा दी गई है, कि जो यहाँ से तुम्हारी ओर जाना चाहें वे न जा सकें, और न वहाँ से कोई हमारी ओर आ सके।”
(लूका 16:26)

यह सत्य इस बात पर ज़ोर देता है कि मृत्यु के बाद मनुष्य की स्थिति स्थायी हो जाती है। जो उद्धार पाए हैं और जो नहीं पाए, उनके बीच एक ऐसा विभाजन है जिसे पार नहीं किया जा सकता। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रार्थना के द्वारा मृत्यु के बाद किसी की स्थिति को बदला नहीं जा सकता।

मृतकों के लिए प्रार्थना करना बाइबिल के अनुसार क्यों उचित
नहीं है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

यदि मृतकों के लिए प्रार्थना करना बाइबिल के अनुसार सही होता, तो तर्क के अनुसार बाइबिल में ऐसे उदाहरण भी मिलते जहाँ किसी को स्वर्ग से हटाकर नरक में भेजने के लिए प्रार्थना की जाती। लेकिन इस प्रकार की कोई भी प्रार्थना शास्त्र में नहीं पाई जाती।

इसलिए, मृतकों के लिए प्रार्थना करना या संतों से यह कहना कि वे हमारे दिवंगत प्रियजनों के लिए मध्यस्थता करें—इन बातों का कोई बाइबिल आधार नहीं है, और यह उनकी अनन्त स्थिति को नहीं बदल सकतीं। इसके बजाय, बाइबिल हमें सिखाती है कि हम अभी, इसी जीवन में, मसीह पर विश्वास करें और पापों से मन फिराएँ, ताकि हम अनन्त जीवन के लिए तैयार हों।

प्रभु हमें यह अनुग्रह दे कि हम हर दिन उसके लिए बुद्धिमानी और विश्वासयोग्यता के साथ जीवन जी सकें।

Share on:
WhatsApp

Print this post